IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय साहित्या का अवदान

(स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय उपन्यासकारों का योगदान)

डॉ. एल पी लमाणी
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
संपर्क संख्या: 9448838262
ईमेल: shrilalmalapur@gmail.com

प्रस्थावान

स्वतंत्रता आंदोलन भारतीय इतिहास का वह युग है, जो पीड़ा, कड़वाहट, दंभ, आत्मसम्मान, गर्व, गौरव तथा सबसे अधिक शहीदों के लहू को समेटे है। स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में समाज के प्रत्येक वर्ग ने अपने-अपने तरीके से बलिदान दिए। इस स्वतंत्रता के युग में साहित्यकार और लेखकों ने भी अपना भरपूर योगदान दिया। अंग्रेजों को भगाने में कलमकारों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई। क्रांतिकारियों से लेकर देश के आम लोगों तक के अंदर लेखकों ने अपने शब्दों से जोश भरा। प्रेमचंद की 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' उपन्यास हो या भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'भारत-दर्शन' नाटक या जयशंकर प्रसाद का 'चंद्रगुप्त'- सभी देशप्रेम की भावना से भरी पड़ी है।

भारतेन्दु बाबू हिन्दी गद्य के प्रवर्तक हैं। हिन्दी गद्य की अन्य विधाओं की भाँति ही हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रारंभ भारतेन्दु युग में ही हुआ । युगप्रवर्तक भारतेन्दु ने स्वयं कोई मौलिक उपन्यास नहीं लिखा परन्तु मराठी, बंगला तथा अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासों का अनुवाद कराकर उन्होंने नवोदित लेखकों को इस दिशा में बढ़ने की प्रेरणा देकर हिन्दी

IJFANS
International Journal of
Food And Nutritional Sciences

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

उपन्यास साहित्य के विकास के लिए महती भूमिका प्रस्तुत की। अनूदित हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में पूर्ण प्रकाश और चन्द्रप्रभा' भारतेन्दु जी का महत्वपूर्ण योगदान है।

विषय क्षेत्र एवं सीमाएं

आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण करना प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य है। युगीन संदर्भ में देखा जाए तो सन 1857 में एक और इन हिंदी साहित्य में नवजागरण काल का आधुनिक काल की शुरुआत हो रही थी तो दूसरी और उसी समय भारतवर्ष में अंग्रेजी हुकूमत की स्थापना हो रही थी। उस हुकूमत के खिलाफ सन 1857 में भारत की ओर से विप्लव प्रयास किया गया था। बदकिस्मती से उस स्वतंत्रता संग्राम में भारत के जनता को सफलता नहीं मिली थी है। इस प्रकार आधुनिक काल का प्रथम चरण आंदोलन से भरपूर है है। उस काल में देशभक्ति की सभी शक्तियां सामूहिक रूप से स्वराज्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील दिखाई पड़ती है।

युगीन संदर्भ में आधुनिक हिंदी साहित्य तत्कालीन विभिन्न भारतीय स्वतंत्र संग्राम के आंदोलन से प्रभावित है। आधुनिक हिंदी साहित्य एक मिशन के रूप में था है।

हिंदी साहित्य के उपन्यसों के काल विभाजन को पूर्व प्रेमचंद्र युग, प्रेमचंद युग, और प्रेमचंदोत्तर युग में विभाजित कर सकते है। उपन्यासकार अपने युगीन प्रभाव से अछूते नहीं रहे बल्कि यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आधुनिक काल के हिंदी उपन्यास कारों ने स्वतंत्र प्राप्ति के महायज्ञ में हिस्सा लेते हुए अपने लेखनी द्वारा उस पराधीनता के काल को चित्रित किया है।

भारतीय स्वतंत्र संग्राम के विविध आयाम

अंग्रेजों ने 200 साल के लंबे शासनकाल के दौरान भारतवर्ष में अपने शासन की नींव मजबूत कर ली थी। इस लंबे शासनकाल में भारतीय जनता का हर तरह से शोषण किया गया। इस शोषण से व्यथित होकर भारतीय जनता ने पराधीनता का एहसास किया था। भारत देश को स्वतंत्रता के पास से मुक्त कराने के लिए इस देश में राष्ट्रीय नायकों, चिंतकों

द्वारा विभिन्न अभियान चलाए गए थे। दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय मुक्ति का आंदोलन चलाया गया था। अतः प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विविध आयामों एवं घटनाओं कांग्रेसियों के विभिन्न अधिवेशन, जलियांवाला बाग हत्याकांड, बांग्ला का अकाल, भारत-पाकिस्तान विभाजन, हिन्द छोड़ो आंदोलन, नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन इत्यादि का जिक्र किया गया है।

<u>हिंदी उपन्यासों में स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण</u>

हिंदी उपन्यास साहित्य में स्वाधीनता प्राप्ति के लिए आंदोलनों को उपन्यासकारों ने किस रूप में ग्रहण किया इसका विवेचन हम निम्नलिखित विभागों में विभाजित करके देख सकते हैं:-

1. गांधी जी एवं गांधीवाद से प्रभावित उपन्यास
2. समाजवादी उपन्यास
3. क्रांतिकारी एवं आतंकवादी उपन्यास
4. संघर्ष की अन्य घटनाओं से प्रभावित उपन्यास

'कायाकल्प' में प्रेमचंद ने हिंदू और मुस्लिम, मंदिर, मस्जिद, गाय और गाजे-बाजे को लेकर एक दूसरे के रक्त से अपने करों को रंगीन करने लगे थे। आए दिन किसी न किसी हिंदू मुस्लिम दंगा होना एक साधारण बात हो चली थी। कायाकल्प में इन दोनों के कारण पर भी प्रकाश डाला गया है।

'गबन' की कथा का प्रारंभ सामाजिक समस्या से होता है और अंतरराष्ट्रीय भावना से पूंजीवादी शोषण, नौकरशाही का नंगा नाच, पुलिस के अत्याचारों का वर्णन मिलता है।

'कर्मभूमि' प्रेमचंद की प्रेमाश्रम और रंगभूमि के उपरांत सशक्त राजनीतिक उपन्यास है। महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम से अनेक तथ्य जैसे, कृषक, नारी जागरण, हिंदू मुस्लिम एकता आदि को उपन्यासकार ने ग्रहण किया है।

'जागरण' श्रीनाथ सिंह का गांधीवादी उपन्यास है जिसमें गांधीजी के ग्रामीण जागरण का भाव निहित है। कुछ आंदोलन के नेतृत्व कृपाशंकर द्वारा होता है। इस उपन्यास का रचनाकाल और बारदोली सत्याग्रह की प्रारंभिक आंदोलन का परिचय मिलता है।

'चंद हसीनों के खतूत' में उग्र जी ने पत्र शैली में युगीन सांप्रदायिकता समस्या का अंकन किया है। असहयोग आंदोलन के कारण भारत में विषाक्त वातावरण बन गया था। उसके युगीन चित्र चंद हसीनों के खतूत में बताया गया है।

'बुधवा की बेटी' असहयोग आंदोलन की असफलता के बाद गांधीजी ने हरिजन का नाम अपने रचनात्मक कार्यक्रम के अंतर्गत अपनाया जाता है।

सत्याग्रह के विषय पर चरण जैन ने 'प्रतीक' से काम किया है। इस उपन्यास का कथानक तो गांधी सत्याग्रह से लिया गया है परंतु देश और काल गांधीजी की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह है।

'सुनीता' हरिप्रसाद क्रांतिकारी उपन्यास है। युगीन आतंकवादी दल की गतिविधियों का परोक्ष रूप से दर्शाया गया है। पिस्तौल की नली जो क्रांतिकारी का कवच होता है उसकी झलक उपन्यासकार ने सशक्त रूप से दिखाया है।

उषा देवी मित्रा का उपन्यास 'बच्चन' के मूल जितना सामाजिक है उतना ही राजनीतिक भी। यह समाज और राजनीति का समन्वित रूप है।

'मेरा देश' डॉ धनीराम प्रेम का पूर्ण तहा राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे डॉक्टर प्रेम ने गागर में सागर भर दिया है। मेरे देश की कहानी दिल को छू लेती है। असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि पर रचित यह उपन्यास देशप्रेम और राष्ट्र भक्ति से लबालब है।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

राधिका रमण प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यास 'शिल्प' में भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को युगीन परिस्थितियों के अनुसार डालने का प्रयत्न किया है उनके राम रहीम, पुरुष और नारी, गांधी टोपी और पूर्व पश्चिम में राष्ट्रीय आंदोलन का चित्रण हुआ है।

'पुरुष और नारी' में सुधा और अजीत के प्रेम की समस्या को स्वतंत्र संघर्ष की रंगभूमि में राजनीतिक अंश के रूप में उठाया है। अजीत गांधी आश्रम साबरमती जाता है, एक गांव में सरिता के कागज पर आश्रम की स्थापना भी करता है। गांधीजी के नमक सत्याग्रह की प्रक्रिया का सुंदर संयोजन राजा जी ने किया है।

इलाचंद्र जोशी जी मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार है। उनके 'सन्यासी' जिसमें राजनीतिक अंश ही आई है। बलदेव राजनीतिक पात्र है। इसकी उस भावना के पीछे गांधीवाद का विरोध स्पष्ट है।

'निमंत्रण' में भगवती प्रसाद वाजपेई ने बापू की छत्रछाया में होने वाले जन आंदोलन की तस्वीरें अपने साहित्य में पेश की है। मजदूरों और विकलांगों को भी अपने साहित्य का हीरो बनाया है। निमंत्रण गांधीजी के समाजवादी भावों से ओतप्रोत उपन्यास है।

भगवती चरण वर्मा ने 'तेरे मेरे रास्ते' का निर्माण भारतीय स्वतंत्र संघर्ष के युग में विद्यमान पूंजीवादी सर्वहारा वर्ग का सामान्य विवाद और क्रांति वाद के विभिन्न वादों की पृष्ठभूमि में किया है।

आचार्य चतुरसेन ने 'आत्मदाह' के उपरांत राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम की पृष्ठभूमि में 'धर्मपुत्र' की रचना की है। धर्मपुत्र गांधीवादी राजनीति का वाहक है। उपन्यासकार ने गांधीजी के हिंदू मुस्लिम एकता के स्वप्न को इसमें साकार किया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के परिलक्ष्य में लिखी गयी अन्य उपन्यास निम्नलिखित है:-

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की घटनाओं से प्रभावित होकर स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्र उत्तर कालीन उपन्यासकारों की उपन्यास, चंद हसीनों के खतूत, गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि,

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 12, 2022

वरदान, गबन, कायाकल्प, प्रेमाश्रम, चंद्रकांत, जागरण, मनीष आनंद, बुधवा की बेटी, सरकार तुम्हारी आंखों में, सत्याग्रह, सुनीता, दो पहलू ,निमंत्रण, टेढ़े मेढ़े रास्ते, कल्याणी, आत्मदाह, गांधीवादी, चबूतरा, बलि का बकरा, दादा कामरेड, देशद्रोही, शेखर एक जीवनी, पार्टी कामरेड, मशाल, बाबा बटेश्वर नाथ, प्रतिशोध ,मृत्यु, जया यात्रा, मैला अंचल, स्वाधीनता के पद पर, अमरबेल, भंवर जाल, डॉक्टर शेफाली शेष अवशेष, स्वराज्य दांत, देश की हत्या, स्वतंत्र भारत, ज्वालामुखी, भूले बिसरे चित्र, इत्यादि उपन्यासों का सांकेतिक रूप से परिचय दिया गया है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी उपन्यासों के परिचय के उपरांत यह धारणा सिद्ध होती है कि उपन्यासकार ने जहां तक गांधीवादी को राजनीति की उपेक्षा की वहीं गांधी युगीन उपन्यास कारों ने राजनीति को अपनी रचना का प्रमुख विषय बनाया है। विभिन्न राजनीतिक दलों ने प्रतिपादन हेतु युगीन उपन्यासकार बाद विशेष से प्रतिबद्धता का आलिंगन करता हुआ आगे बढ़ा है। इसका फल यह निकला कि उपन्यासकार ने युगीन राजनीतिक आंदोलन से प्रभावित होकर उपन्यास की रचना की है। जिसके पीछे उसकी अपनी दृष्टि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ भगवतीशरण मिश्रा, (२०१०) हिंदी के चर्चित उपन्यासकार,राजपाल एंड संस,कश्मीरी गेट, दिल्ली ।
2. डॉ टी मोहन सिंह, (१९८७), साठोत्तरी हिंदी उपन्यास: प्रतिपाद्य और शिल्प, दक्षिणाँचलीया साहित्य समिति, गांधीनगर, हैदराबाद।
3. डॉ शशि भूषण सिंहल, (२०००), भारतीय स्वतंत्रता और हिंदी उपन्यास,आर्य प्रेक्षण मंडल, सरस्वती भंडार, गांधीनगर, दिल्ली।
4. हिंदी साहित्य उपन्यास का उद्भव और विकास लक्ष्मीकांत सिन्हा।

5. श्री पि एच ओडेदरा, (2008), आधुनिक उपन्यासों में स्वतंत्रता संग्राम का चित्रण, शोध प्रबंध, सौराष्ट्र विश्वविद्यालय ।

****